(च) (i) फसल (ii) अनाज (iii) भोजन (iv) उपज

(छ) (i) बुध (ii) शुक्र (iii) मंगल (iv) चन्द्रमा

(ज) (i) आर्य भट्ट (ii) रोहिणी (iii) चन्द्रमा (iv) भास्कर

(झ) (i) एशिया (ii) अफ्रीका (iii) प्रशांत महासागर (iv) उत्तर अमेरिका

(ञ) (i) कर्क रेखा (ii) भूमध्य रेखा (iii) मकर रेखा (iv) ग्रीनविच रेखा

(त) (i) स्थलमण्डल (ii) जैवमण्डल (iii) वायुमण्डल (iv) सौरमण्डल

(थ) (i) पर्वत (ii) सागर (iii) पठार (iv) मैदान

(व) (i) नाइट्रोजन (ii) आक्सीजन (iii) जल वाष्प (iv) कार्बनडाइआक्साइड

VI. सही जोड़ी मिलाइए-

	क	ख
(i)	गैसों का मिश्रण	परिवार
(ii)	आड़ी रेखाएँ	पृथ्वी
(iii)	खड़ी रेखाएँ	शिलालेख
(iv)	गोलाकार	पाषाण काल
(v)	पृथ्वी का नमूना	अक्षांश
(vi)	सबसे बड़ा ग्रह	देशान्तर
(vii)	आवश्यकता के लिए एक-दूसरे पर निर्भरता	बृहस्पति
(viii)	समाज की इकाई	वायुमंडल
(ix)	पत्थरों का युग	ग्लोब
(x)	पत्थरों पर लिखी जानकारी	परस्पर निर्भरता

पाठ 9

हड़प्पा सभ्यता

आइए सीखें

- प्राचीन सभ्यताएँ नदियों के किनारे क्यों विकसित हुई थीं?
- सिन्धुघाटी सभ्यता/हड़प्पा सभ्यता क्या थी?
- हड़प्पा सभ्यता के पतन के क्या कारण थे?

आदि मानव हमेशा वहीं बसता था, जहाँ उसे पीने के लिए स्वच्छ जल, खाने के लिए भरपूर भोजन और निवास के लिए सुरक्षित स्थान आसानी से उपलब्ध थे। नदियों के किनारे इन तीनों आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से होने के कारण विश्व की प्राचीनतम सभ्यताएं नदियों के किनारे ही विकसित हुई। इसलिए इन सभ्यताओं को **नदी घाटी सभ्यता** कहते हैं।

दिये गए मानचित्र को देखकर पता लगाओ कि कौन-सी सभ्यता किन-किन नदियों के किनारे विकसित हुई। जानकारी को नीचे लिखिए-

---

शिक्षण संकेत : बच्चों को मानचित्र का अध्ययन कराते हुए बताए कि प्राचीन सभ्यताएँ किन-किन नदियों के किनारे विकसित हुई व उनसे तालिका भरवाएँ। आवश्यकतानुसार श्यामपट का प्रयोग करें।

सभ्यता	नदी का नाम
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

इनमें अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित मिस्र की सभ्यता सबसे पुरानी है। यह नील नदी की घाटी में विकसित हुई। दूसरी है मेसोपोटामिया की सभ्यता।

मेसोपोटामिया का अर्थ है दो नदियों के बीच का भू-भाग। ये दो नदियाँ हैं- दजला एवं फरात। इन नदियों के मध्य विकसित हुई सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता कहलाती है। यह सभ्यता 5000 से 500 ई.पू. तक विद्यमान थी। वर्तमान इराक और ईरान का कुछ क्षेत्र भी इसमें सम्मिलित था। तीसरी है चीन की सभ्यता। इसका उदय ह्वांगहो नदी के तट पर (1750 ई.पू. से 220 ई.) हुआ। चौथी है सिंधु घाटी की सभ्यता जिसका विकास आज से लगभग 4500 वर्ष पूर्व उत्तरी पश्चिम प्रायद्वीप में हुआ जिसका कुछ हिस्सा अब पाकिस्तान में है।

नदी घाटी में मानव सभ्यता के विकास के कारण

लाखों वर्ष तक मानव शिकारी और भोजन संग्राहक का जीवन जीता रहा। धीरे-धीरे उसने पशुपालन करना सीखा। कोई दस हजार वर्ष पूर्व उसने खेती करना प्रारंभ किया। उसने अपने सैकड़ों वर्षों के अनुभव से यह सीख लिया था कि मिट्टी में बीज डालने और सींचने से पौधा उगता है।

नदियों के किनारे की मिट्टी उपजाऊ होती है। यहाँ पानी आसानी से मिल जाता है। नदी से नाव या लट्ठे की सहायता से आवागमन की सुविधा रहती है। जानवरों के लिए घास तथा जल आसानी से मिल जाता है। इन सब कारणों से आदि मानव ने नदी की घाटियों में बसना प्रारंभ किया। तब भी मानव पाषाण उपकरणों का प्रयोग करता था।

लगभग 7000 वर्ष पूर्व ताँबे की खोज ने मानव के जीवन में परिवर्तन कर दिया। ताँबा कठोर पत्थर की तुलना में अधिक प्रभावकारी था। टिन के मिश्रण से निर्मित ताँबा पत्थर से भी अधिक मजबूत था। ताँबे के प्रयोग के कारण मानव पाषाण काल से निकलकर ताम्राश्मकाल* (ताँबे व पाषाण) में प्रवेश कर गया।

ताम्राश्मकाल में नदी घाटी सभ्यता का विकास एक लंबे-चौड़े भाग में हुआ। भारत में इस काल की सबसे पुरानी बस्तियाँ दक्षिण पूर्वी राजस्थान (आहार) मध्यप्रदेश में मालवा में (कायथा और एरण) पश्चिमी महाराष्ट्र में (जोखा, नेवासा व दैमाबाद) में मिली है। नर्मदा नदी के तट पर नवदा टोली स्थान पर भी ताम्र पाषाणिक अवशेष मिले हैं।

---

* ऐसा समय जब ताँबे एवं पत्थर के औजार साथ-साथ प्रयोग किये जाते थे। ताम्राश्मकाल या ताम्र पाषाण काल कहते हैं।

सिन्धु घाटी सभ्यता की खोज

सन् 1921 के पूर्व तक भारत की प्राचीनतम सभ्यता वैदिक सभ्यता ही मानी जाती थी। सबसे पहले श्री दयाराम साहनी ने 1921 ई. में हडप्पा में खुदाई आरम्भ कर वहाँ एक नगर के भग्नावशेष प्राप्त किये तत्पश्चात् श्री राखलदास बैनर्जी ने सन् 1922 ई. में सिंध प्रान्त के लरकाना जिले में बौद्ध-स्तूपों की खोज करते हुए कुछ टीलों को खुदवाया, तो वहां भूगर्भ में पक्की नालियाँ और कमरे मिले। इसके बाद तो इस क्षेत्र में 10 वर्षों तक उत्खनन चला तथा अनेक जानकारियाँ प्रकाश में आयीं।

इसी बीच रायबहादुर दयाराम साहनी और माधव स्वरूप वत्स ने हिमालय के तलहटी क्षेत्रों में मानव सभ्यता के प्रमाण खोजे जिसके आधार पर उत्खनन कार्य प्रारंभ हुआ। खुदाई का कार्य हड़प्पा में शुरु हुआ। इस कारण इसे हड़प्पा सभ्यता कहा गया। इसे **'सिन्धु घाटी सभ्यता'** भी कहा जाता है।

धीरे-धीरे इस सभ्यता की खोज विभिन्न स्थलों पर हुई। इसके विस्तार को देखकर पता चलता है कि भौगोलिक दृष्टि से यह विश्व की सबसे बड़ी सभ्यता थी। इसका क्षेत्र मिस्र की सभ्यता के क्षेत्र से 20 गुना अधिक था। इस सभ्यता का विकास भारत और पाकिस्तान के उत्तरी और पश्चिमी भाग में सिन्धु नदी की घाटी में हुआ। सिन्धु घाटी के कारण इस सभ्यता को सिन्धु घाटी सभ्यता के नाम से पुकारा गया। इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान, दक्षिणी अफगानिस्तान तथा भारत के राजस्थान, गुजरात, जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हरियाणा पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं महाराष्ट्र राज्य तक है।

इस सभ्यता के कुछ प्रमुख स्थल ये हैं- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा तथा चन्हुदड़ो (पाकिस्तान), रोपड़ (पंजाब), रंगपुर (सौराष्ट्र) लोथल, सुतकोटडा (गुजरात) कालीबंगा (राजस्थान) धौलाबीरा (गुजरात) बणावली, राखीगढ़ी (हरियाणा), मांडा (जम्मू कश्मीर) दैमाबाद (महाराष्ट्र), आलमगीरपुर, हुलास (उत्तरप्रदेश) इत्यादि।

नगरीय जीवन

हड़प्पा सभ्यता की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी नगर योजना प्रणाली थी। नगर अधिकतर दो अथवा तीन भागों में बंटे थे। सबसे सुरक्षित स्थान किला या दुर्ग कहलाता था। यहाँ उच्च वर्ग का परिवार रहता होगा। नगर के निचले भाग में मध्यम व निम्न वर्ग का निवास था। इन नगरों में सड़कें पूरी सीधी थीं व एक-दूसरे को लंबवत काटती थीं। नगर अनेक खण्डों में विभक्त होता था जैसा कि आजकल के नगर होते हैं। हड़प्पा सभ्यता के नगरों में कोठार (अनाज भरने के गोदाम) का महत्वपूर्ण स्थान था। हड़प्पा तथा कालीबंगा में भी इनके प्रमाण मिले हैं।

मोहनजोदड़ो का सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल विशाल स्नानागार है। यह 11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा है। इसके दोनों सिरों पर तल तक सीढ़ियाँ बनी हैं। बगल में कपड़े बदलने के कक्ष हैं। स्नानागार का फर्श पक्की ईटों का बना है। पास के एक कमरे में बड़ा सा कुआँ बना है। संभवतः यह स्नानागार किसी धार्मिक अनुष्ठान संबंधी स्नान के लिए बना होगा।

इसके अलावा भी हर छोटे-बड़े मकान में आंगन (प्रांगण) और स्नानागार होता था। पर्यावरण की दृष्टि से जल निकास प्रणाली अद्‌भुत थी। घरों का पानी बहकर सड़कों तक आता था। यहाँ यह पानी मुख्य नाली से मिलता जो ईटों व पत्थर की पट्टियों से ढँकी होती थी। सड़कों की मुख्य नालियों में सफाई की दृष्टि से नरमोखे (मेनहोल) भी बने थे। उनके द्वारा नालियों की समय-समय पर सफाई की जाती थी। ताम्राश्म युगीन सभ्यता में हड़प्पा की जल निकास प्रणाली अद्वितीय थी। विश्व की किसी अन्य सभ्यता में सफाई को इतना महत्व नहीं दिया जाता था जितना की हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने दिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि हड़प्पा सभ्यता में पर्यावरण शुद्धि की ओर अधिक ध्यान दिया जाता था।

- **हड़प्पा सभ्यता में भवनों के लिए पक्की ईटों का प्रयोग विशेष बात थीं। समकालीन मिस्र की सभ्यता व मेसोपोटामिया की सभ्यता में इसका प्रचलन नहीं था।**
- **हड़प्पा निवासी विश्व के प्रथम लोग थे जिन्होंने विस्तृत सड़कों और नालियों से युक्त सुनियोजित नगर का निर्माण किया।**

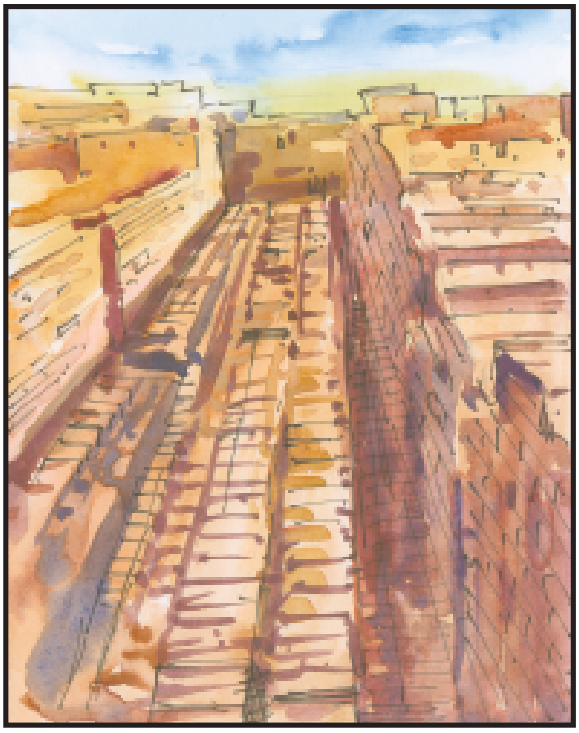

हड़प्पाकालीन नगर की सड़कें एवं ढकी हुई नालियाँ

कृषि व पशुपालन-

हड़प्पा सभ्यता की जीवन दायिनी नदी सिन्धु थी। यह नदी अपने साथ भारी मात्रा में उपजाऊ मिट्टी लाती थी। हड़प्पा सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, सरसों, कपास, मटर तथा तिल की फसलें उगाते थे। संभवत: किसानों से राजस्व के रूप में अनाज लिया जाता था। हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न नगरों में मिले कोठार (अनाज गोदाम) इसके प्रमाण हैं।

कालीबंगा में पाये गये जुताई के मैदान से प्रतीत होता है कि उनका खेती का तरीका आज की तरह ही था।

हड़प्पा निवासी कृषि के साथ-साथ पशुपालन भी करते थे। ये बैल-गाय, बकरी, भेड़, सूअर, भैंस, कुत्ता, ऊँट तथा हाथी, घोड़ा पालते थे। ये सिंह, गेंडा, हंस, बतख, बन्दर, खरगोश, मोर, हिरण, मुर्गा,

काँसे की मूर्ति

काँसे के बर्तन एवं औजार

मिट्टी के खिलौने

मिट्टी के बर्तन

पत्थर के औजार

तोता, उल्लू आदि जानवरों से परिचित थे। इनमें से कुछ जानवरों की स्वतंत्र आकृतियाँ व कुछ का अंकन मिट्टी की मुहरों पर मिला है।

- **हड़प्पा निवासी विश्व के प्रथम लोग थे जिन्होंने कपास का उत्पादन सबसे पहले सिन्धु क्षेत्र में किया । मोहनजोदड़ो में बुने हुए सूती कपड़े का एक टुकड़ा मिला है, और कई वस्तुओं पर कपड़े के छापे भी मिले हैं। कताई के लिए तकलियों का इस्तेमाल होता था।**
- **गुजरात के हड़प्पा सभ्यता के लोग चावल उपजाते थे और हाथी पालते थे। ये दोनों बातें मेसोपोटामिया के निवासियों को ज्ञात न थी।**

शिल्प तथा तकनीकी ज्ञान

हड़प्पा सभ्यता ताम्राश्म काल की है। यह कांस्य युग भी कहलाता है। ताँबे में जिंक/टिन मिलाकर कांसा बनाया जाता था। कांसा ताँबे की तुलना में अधिक मजबूत होता है। खुदाई से प्राप्त सामग्री के आधार पर ज्ञात होता है कि इस सभ्यता के लोगों ने धातुओं के गलाने, ढालने और सम्मिश्रण की कला में विशेष उन्नति की थी। मिट्टी के बर्तन बनाने, खिलौने बनाने, मुहरें निर्माण करने में यहां के कलाकार सिद्धहस्त थे। प्रतिमाओं को पकाया भी जाता था। इसके अलावा स्वर्णकार चांदी, सोना और रत्नों के आभूषण और विभिन्न रंगों के मनके भी बनाते थे। कांसे की नर्तकी उनकी मूर्तिकला का सर्वश्रेष्ठ नमूना है।

धार्मिक मान्यताएँ

हड़प्पा सभ्यता में किसी भी देवालय के प्रमाण नहीं मिले हैं। पकी हुई मिट्टी की स्त्री प्रतिमाएँ भारी संख्या में मिली हैं। इससे अनुमान होता है कि देवी उपासना प्रचलित थी। एक मुहर पर तीन सींग युक्त ध्यान करते हुए देवता का अंकन है। यह पद्मासन में बैठा है। इसके आसपास एक हाथी, एक बाघ, एक गेंडा, एक भैंसा व दो हिरण का अंकन है। कुछ पुरातत्वविदों ने इस देवता की पहचान पशुपति (शिव) के रूप में की है।

हड़प्पा में पकी मिट्टी व पत्थर पर बनें लिंग और योनि के अनेक प्रतीक मिले हैं। इसके अलावा कमण्डल, यज्ञवेदी, स्वास्तिक आदि के अवशेष हड़प्पा सभ्यता के लोगों के धार्मिक विचारों व क्रिया-कलापों की जानकारी प्रदान करते हैं।

मध्यप्रदेश के कायथा (जिला उज्जैन) की खुदाई से हड़प्पा सभ्यता के समान एक मुहर, सेलखेड़ी के मनके, मिट्टी की मूर्तियाँ तथा मिट्टी के बर्तन मिले हैं।

कूबड़ वाले सांड की मृणमूर्ति तथा अंकन कई मुहरों पर मिलता है। उत्खनन में ताबीज बड़ी तादाद में मिले हैं। शायद हड़प्पावासी भूत-प्रेतों में विश्वास कर उनसे रक्षा के लिये ताबीज पहनते थे।

हड़प्पा सभ्यता में पीपल के वृक्ष की पूजा के प्रमाण मृणमुहरों तथा पात्रों पर मिलते हैं। इस वृक्ष की उपासना आज तक जारी है। भारतीय पीपल को पवित्र वृक्ष मानते हैं। वैज्ञानिक भी इस वृक्ष को पर्यावरण शुद्धि की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानते हैं। पात्रों पर किये कई चित्रण धार्मिक विचारों की जानकारी प्रदान करते हैं। कुछ पात्रों पर मोर का अंकन मिलता है। आज भी भारत के विभिन्न अंचलों में कुम्हार लोग अपने द्वारा निर्मित पात्रों में मोर का अंकन करते हैं।

हड़प्पा सभ्यता के लोगों के विभिन्न धार्मिक विश्वास भले ही रहे हों परन्तु वे योग विद्या के प्रारंभिक जनक भी थे। मृणमुहरों पर प्राप्त चित्रांकन से इस बात की पुष्टि होती है कि हड़प्पावासी योगिक क्रियाओं के जानकार थे।

लिपि

हड़प्पावासियों को लेखन कला का भी ज्ञान था। संभवत: उनकी लिपि चित्र लिपि थी। इन्हें चित्र या अक्षर के रूप में लिखा जाता था। लेकिन इस लिपि को आज तक सुनिश्चित रूप से पढ़ा नहीं जा सका है।

हड़प्पन लिपि

माप-तौल

हड़प्पावासी माप-तौल के तरीकों से परिचित थे। माप हेतु ये 'बाट' और 'दंड' का प्रयोग करते थे। खुदाई से बाट व कांसे का माप का उपकरण (पैमाना) प्राप्त हुआ है।

मुहरें

हड़प्पावासियों की सर्वोत्तम कलाकृतियाँ उनकी मृणमुद्राएं हैं। अब तक खुदाई से लगभग 5000 मुद्राएं प्राप्त हो चुकी हैं। इन पर जानवरों की आकृतियाँ तथा लघु लेख अंकित है।

हड़प्पा सभ्यता का पतन

इस सभ्यता के इतने बड़े नगर जमीन में दबकर कैसे नष्ट हो गये, इस संबंध में अब तक इतिहासकार पूरी तरह से संतुष्ट नहीं है। अब तक प्राप्त प्रमाणों के अनुसार ऐसा अनुमान है कि इतनी विशाल सभ्यता के पतन में निम्नलिखित कारक उत्तरदायी रहे होंगे:-

1. भूकम्प आने के कारण संभवत: सिंधु नदी का मार्ग बदल गया होगा और ये नगर भूस्खलन में जमीन में दब गया होगा।
2. इस क्षेत्र में वर्षा की कमी व बढ़ते हुए रेगिस्तान से इस क्षेत्र में खेती तथा पशुपालन पर बुरा असर पड़ा होगा और इस सभ्यता का पतन हो गया।
3. कुछ लोगों का अनुमान है कि सिंधु नदी में बाढ़ आई होगी और सभ्यता का अन्त हो गया होगा।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) हड़प्पा सभ्यता में किस पेड़ की पूजा के प्रमाण मिले हैं?

(ब) हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख चार स्थलों के नाम लिखिए।

(स) नदी घाटी सभ्यता नदियों के किनारे ही क्यों विकसित हुई?

(द) हड़प्पा सभ्यता के शिल्प व तकनीकी ज्ञान के बारे में लिखिए।

(य) हड़प्पा सभ्यता में कौन-कौन सी फसलें उगायी जाती थी?

(र) सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ क्या है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) हड़प्पावासियों की नगर रचना का वर्णन कीजिए।

(ब) हड़प्पावासियों के धार्मिक विश्वासों के बारे में आप क्या जानते है? लिखिए।

(स) हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारणों को लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. मोहनजोदड़ो का सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल विशाल ..... है। (गोदाम/स्नानागार)

ब. हड़प्पा सभ्यता ..... सभ्यता है। (नगरीय/ग्रामीण)

स. कांसे की नर्तकी हड़प्पा सभ्यता की ..... का सर्वश्रेष्ठ नमूना है। (मूर्तिकला/वास्तुकला)

द. कूबड़ वाले सांड का अंकन कई ..... पर मिलता है। (भवनों/मुहरों)

य. हड़प्पावासियों की लिपि ..... लिपि थी। (देवनागरी/चित्र)

र. हड़प्पा सभ्यता में ..... व पर्यावरण शुद्धि पर अधिक ध्यान दिया गया था। (गंदगी/साफ-सफाई)

4. नदी घाटी और उनमें विकसित सभ्यताओं की सही जोड़ी मिलाओ-

	क	ख
अ.	नील नदी घाटी	मोहनजोदड़ो व हड़प्पा सभ्यता
ब.	दजला-फरात नदी घाटी	मिश्र की सभ्यता
स.	सिंधु घाटी	चीन की सभ्यता
द.	ह्वांगहो नदी घाटी	मेसोपोटामिया की सभ्यता

5. सही विकल्प चुनिए-

1. हड़प्पा सभ्यता में कौन सी विशेषता नहीं पाई गयी-
   (i) सुनियोजित नगरीय व्यवस्था (ii) धातु गलाने व ढलाने की कला
   (iii) पेड़ों व गुफाओं में रहना (iv) पशुपालन व कृषि
2. हड़प्पावासी कौन सी धातु का उपयोग अधिक करते थे-
   (i) लोहा (ii) ताँबा (iii) सोना (iv) चाँदी
3. हड़प्पा सभ्यता के पतन के संभावित कारणों में से नहीं था-
   (i) आग लगना (ii) आर्यों का आक्रमण (iii) मुगलों का आक्रमण (iv) तेज वर्षा

प्रोजेक्ट कार्य-

- मानचित्र में निम्नलिखित नगरों को दर्शाइए-
  हड़प्पा, कालीबंगा, लोथल, रोपड़।

❖❖❖❖

पाठ 10

वैदिक संस्कृति

आइए सीखें

- वैदिक संस्कृति क्या है?
- आर्यों का जीवन कैसा था।
- वैदिककाल में सामाजिक व आर्थिक जीवन कैसा था?

वेद भारत के प्राचीन ग्रंथ हैं। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, अरण्यक आदि को वैदिक साहित्य कहते हैं। वेद का अर्थ है ज्ञान अथवा पवित्र आध्यात्मिक ज्ञान। विद्वान लोग वैदिक काल और वैदिक साहित्य को दो भागों में बाँटते हैं- प्रारंभिक दौर का प्रतिनिधित्व ऋग्वेद करता है। इस काल को पूर्व वैदिककाल या

ऋग्वैदिक काल भी कहा जाता है और बाद के दौर में शेष तीनों वेद (सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद), ब्राह्मण, अरण्यक और उपनिषद् आते हैं। इस काल को उत्तर वैदिक काल भी कहा जाता है। वैदिक साहित्य को समृद्ध होने में लंबा समय लगा। वैदिक साहित्य से हम वैदिक काल के लोगों के निवास के क्षेत्र, उनके खान-पान व रहन-सहन के विषय में जान पाते हैं। इस युग की संस्कृति को ही वैदिक संस्कृति कहते हैं।

इतिहासकारों का मत है कि इस काल में कुछ लोग उत्तर-पूर्वी ईरान, कैस्पियन सागर या मध्य एशिया से छोटे छोटे समूहों में आकर पश्चिमोत्तर भारत में बस गये। ये अपने आप को आर्य कहते थे। कतिपय इतिहासकार इस मत को स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि इसके पुरातात्विक व साहित्यिक प्रमाण नहीं हैं। उनका मत है कि आर्य भारत के मूल निवासी थे। सभ्यता और संस्कृतियों का विकास सदैव नदियों के किनारे हुआ है। सिन्धु, सतलज, व्यास, सरस्वती नदियों के किनारे आर्यों ने ऋचाओं की रचना की, जिनका संग्रह ऋग्वेद है।

वर्तमान में विलुप्त, सरस्वती नदी का वर्णन वैदिक साहित्य में मिलता है। पुरातत्ववेत्ताओं तथा भूवैज्ञानिकों ने अपनी नवीन खोजों से सिद्ध किया है कि सरस्वती नदी 2000 ई.पू. तक पृथ्वी पर प्रवाहित होती रही होगी। पुरातत्ववेत्ताओं का अनुमान है कि हड़प्पा सभ्यता का उद्गम तथा विनाश सरस्वती नदी के किनारे हुआ होगा।

सामाजिक जीवन

आर्य पहले छोटे-छोटे कबीलों में बसे था। कबीले छोटी-छोटी इकाइयों में बँटे थे जिन्हें 'ग्राम' कहते थे। प्रत्येक ग्राम में कई परिवार बसते थे। इस समय संयुक्त परिवार हुआ करते थे एवं परिवार का सबसे वृद्ध व्यक्ति मुखिया हुआ करता था।

समाज मुख्यत: चार वर्णों में बंटा था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। यह वर्गीकरण लोगों के कर्म (कार्यों) पर आधारित था न कि जन्म पर। गुरुओं और शिक्षकों को ब्राह्मण, शासक और प्रशासकों को क्षत्रिय, किसानों, व्यापारियों और साहूकारों को वैश्य तथा दस्तकारों और मजदूरों को शूद्र कहा जाता था। लेकिन बाद में व्यवसाय पैतृक होते चले गए और एक व्यवसाय से जुड़े लोगों को एक **जाति** के रूप में माना जाने लगा। हुनर में विशेषज्ञता बढ़ने के साथ-साथ जातियाँ भी बढ़ने लगीं और जाति तथा वर्ण-व्यवस्था कठोर बनती गई। एक वर्ण से दूसरे में जाना कठिन हो गया।

समाज की आधारभूत इकाई परिवार थी। बाल विवाह नहीं होते थे। युवक एवं युवतियाँ अपनी पसंद से विवाह कर सकते थे। सभी सामाजिक और धार्मिक अवसरों पर पत्नी पति की सहभागिनी होती थी। महिलाओं का सम्मान था और कुछ को तो **ऋषि** का दर्जा भी प्राप्त था। पिता की संपत्ति में उसकी सभी संतानों का हिस्सा होता था। भूमि पर व्यक्तियों तथा समाज का स्वामित्व था। मुख्यत: चारे वाली भूमि, जंगल तथा जलाशयों जैसे तालाब और नदियों पर समाज का स्वामित्व होता था जिसका अभिप्राय था कि गाँव के सभी लोग उनका उपयोग कर सकें।

खान-पान

वैदिक काल में आजकल के सभी अनाजों की खेती की जाती थी। इसी प्रकार आर्यों को सभी पशुओं

की जानकारी भी थी। लोग चावल, गेहूँ के आटे तथा दालों से बने पकवान खाते थे। **दूध, मक्खन** और **घी** का प्रयोग आम था। फल, सब्जियाँ, दालें और मांस भी भोजन में सम्मिलित थे। वे **मधु** तथा नशीला पेय **सुरा** भी पीते थे। धार्मिक उत्सवों पर **सोम** पान किया जाता था। **सोम** और **सुरा** पीने को हतोत्साहित किया जाता था क्योंकि यह व्यक्ति के अशोभनीय व्यवहार का कारण बनते थे।

आर्थिक जीवन

वैदिक काल के लोगों का आर्थिक जीवन कृषि, कला, हस्तशिल्प और व्यापार पर केंद्रित था। बैलों और सांडों का खेती करने एवं गाड़ियाँ खींचने के लिए उपयोग किया जाता था। रथ खींचने के लिए घोड़ों का उपयोग किया जाता था। पशुओं में **गाय** को सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं पवित्र स्थान दिया जाता था। वैदिक काल में गाय को चोट पहुँचाना अथवा उसकी हत्या करना वर्जित था। गाय को **अघ्न्य** (जिसे न तो मारा जा सकता है और न ही चोट पहुँचाई जा सकती है) कहा जाता था। वेदों में गौहत्या अथवा गाय को चोट पहुँचाने पर परिस्थिति अनुसार **देश निकाला** अथवा **मृत्यु-दंड** देने का प्रावधान है।

प्रारंभिक काल में बर्तन बनाना, कपड़ा बुनना, धातु कर्म, बढ़ई का काम इत्यादि व्यवसाय थे। प्रारंभिक काल में धातुओं में केवल **ताँबा** धातु की ही जानकारी थी। दूर-दूर तक व्यापार होता था। वेदों में समुद्री मार्ग से व्यापार की चर्चा आती है। बाद के काल में हमें अन्य कई व्यवसायों, जैसे गहने बनाना, रंगरेजी, रथ बनाना, तीर-कमान बनाना तथा धातु पिघलाने आदि की जानकारी मिलती है। हस्तशिल्पियों की **श्रेणियाँ** (संघ) भी बनीं और उनके मुखिया को **श्रेष्ठी** कहा जाता था। बाद के काल में लोहे की जानकारी होने के बाद ताँबा **लोहित अयस** और लोहा **श्याम अयस** के नामों से जाना जाने लगा।

प्रारंभिक काल में लोग स्वेच्छा से राजा को उसकी सेवाओं के फलस्वरूप उपहार के रूप में **बलि** (ऐच्छिक उपहार) दिया करते थे जो बाद में एक नियमित कर बन गया जिसे **शुल्क** कहा जाता था। उस समय उपयोग किए जाने वाले सिक्कों को **निष्क** कहा जाता था।

धर्म और दर्शन

ऋग्वेद काल के लोग प्रकृति की शक्ति दर्शाने वाले बहुत से देवताओं की पूजा करते थे जैसे- अग्नि, सूर्य, वायु, आकाश और वृक्ष। इनकी पूजा आज भी होती है। हड़प्पा सभ्यता में हम कई वस्तुओं जैसे **पीपल, सप्तमातृकाओं** और **शिवलिंगों** का चित्रण पाते हैं जिन पर हिंदू आज भी श्रद्धा रखते हैं। अग्नि, वात और सूर्य से समाज की रक्षा के लिए प्रार्थना की जाती थी। **इंद्र, अग्नि** और **वरुण** सबसे अधिक मान्य देवता थे। **यज्ञ** एक जाना-माना धार्मिक कृत्य था। कभी-कभी बड़े विशाल यज्ञों का आयोजन किया जाता था जिसमें बहुत से पुरोहितों की आवश्यकता होती थी।

उत्तर वैदिक काल में कर्मकांड और यज्ञ के साथ साथ **ज्ञान मार्ग** को महत्व दिया गया। **ज्ञान मार्गी** चिंतकों (दार्शनिकों) द्वारा जिन प्रश्नों पर चर्चा की गई है वे हैं- ईश्वर क्या है? ईश्वर कौन है? जीवन क्या है? संसार क्या है? मृत्यु के पश्चात मनुष्य कहाँ जाता है? आत्मा क्या है? इत्यादि। दार्शनिकों के चिंतन को उनके निकट बैठने वाले शिष्यों ने कंठस्थ किया और बाद में उन्हें लिपिबद्ध किया गया। ये ग्रंथ 'उपनिषद' कहलाये। उपनिषद भारतीय दर्शनशास्त्र के प्रमुख ग्रंथ है। इन्हें वेदों के अंग माना जाता है।

विज्ञान

वेद, ब्राह्मण और उपनिषद् इस समय के विज्ञान के विषय में पर्याप्त जानकारी देते हैं। **गणित** की सभी शाखाओं को सामान्यत: गणित नाम से ही जाना जाता था जिसमें **अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित, खगोल विद्या** और **ज्योतिष** सम्मिलित थे।

वैदिक काल के लोग **त्रिभुज** के बराबर क्षेत्रफल का वर्ग बनाना जानते थे। वे **वृत्त** के क्षेत्रफलों के वर्गों के योग और अंतर के बराबर का **वर्ग** भी बनाना जानते थे। **शून्य** का ज्ञान था और इसी कारण बड़ी संख्याएँ दर्ज की जा सकीं। इसके साथ ही प्रत्येक अंक के स्थानीय मान और मूल मान की जानकारी भी थी। उन्हें घन, घनमूल, वर्ग और वर्गमूल की जानकारी थी और उनका उपयोग किया जाता था।

वैदिक काल में **खगोल विद्या** अत्यधिक विकसित थी। वे आकाशीय पिंडों की गति के विषय में जानते थे और विभिन्न समय पर उनकी स्थिति की गणना भी करते थे। इससे उन्हें सही पंचांग बनाने तथा सूर्य एवं चंद्रग्रहण का समय बताने में सहायता मिलती थी। वे यह जानते थे कि **पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है। चाँद, पृथ्वी के इर्द-गिर्द घूमता है।** उन्होंने पिंडों के घूर्णन का समय ज्ञात करने तथा आकाशीय पिंडों के बीच की दूरियाँ मापने के प्रयास भी किए।

वैदिक सभ्यता काफी उन्नत प्रतीत होती है। लोग **नगरों,** प्राचीर से घिरे नगरों **(पुरों)** तथा गाँवों में रहते थे। वे दूर-दराज तक व्यापार करते थे। विज्ञान पढ़ा जाता था और विज्ञान की विभिन्न शाखाएँ अत्यधिक विकसित थीं। उन्होंने सही पंचांग बनाए और चंद्र एवं सूर्य ग्रहणों के समय की पूर्व सूचना दी। आज भी हम उनकी विधि से गणना कर ग्रहण का समय ज्ञात कर सकते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) वैदिक साहित्य कौन से हैं?

(ब) वैदिक काल में सिक्कों को क्या कहते थे?

(स) वैदिक काल में विशेष रूप से किन देवताओं की पूजा होती थी?

2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए-

(अ) आर्यो के काल को वैदिककाल क्यों कहा जाता है?

(ब) वैदिक काल में समाज किन-किन वर्णों में बँटा था?

(स) वैदिक काल के आर्थिक जीवन का वर्णन कीजिए।

(द) 'गणित व खगोल विद्या वैदिक काल में विकसित थी', लिखिए।

3 स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब' का सही मिलान कीजिये।

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(अ) बलि	गाय
(ब) अघ्न्य	सिक्के
(स) निष्क	नशीला पेय
(द) सुरा	कर व शुल्क

4 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(अ) सरस्वती नदी के किनारे ..... की रचना हुई।

(ब) ऋग्वेद के युग में ..... व्यवसाय के आधार पर समाज का वर्गीकरण हुआ।

(स) उत्तर वैदिक काल में हथियार ..... धातु से बनाये गये।

5 सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(अ) वैदिक काल में आर्यों को निम्न में से किसका ज्ञान नहीं था-

(i) शून्य का ज्ञान (ii) खगोल विद्या (iii) ताँबे का (iv) अष्टांग मार्ग

(ब) वैदिक काल की सामाजिक विशेषताओं में कौनसी शामिल नहीं थी-

(i) महिलाओं को सम्मान देना (ii) कर्म के आधार पर वर्ण विभाजन

(iii) युवक-युवतियों का पसंद से विवाह होना (iv) बाल विवाह

❖❖❖❖❖

पाठ 11

जनपदों और महाजनपदों का युग

(600 ई.पू. से 400 ई.पू.)

आइए सीखें

- जनपद एवं महाजनपद से क्या आशय है।
- मगध साम्राज्य की स्थापना कैसे हुई थी।
- मगध साम्राज्य की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ कैसी थीं।
- महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध की मुख्य शिक्षाएँ क्या हैं।

पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि आर्य लोग किस प्रकार नदियों के उपजाऊ मैदान में निवास करते थे। वे धीरे-धीरे सिन्धु, झेलम, सतलज, व्यास तथा सरस्वती नदियों की घाटियों, मैदानों से आगे बढ़े। वे गंगा के उपजाऊ प्रदेश में बसने लगे। जंगलों को साफ कर उन्होंने खेती के लिए जमीन तैयार की। वहाँ **जनपद** बसाये। जनपद का मतलब है 'मनुष्य के बसने का एक क्षेत्र।' इन जनपदों के नामकरण उनके स्थापना करने वाले जन या कुल पर थे। महाभारत में अनेक जनपदों का उल्लेख है। भगवान बुद्ध के पूर्व सोलह महा जनपद अंग, मगध, काशी, कौशल, वज्जि, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवंति, चेदी, गंधार, कम्बोज आदि थे। अवंति महाजनपद के दो भाग थे। उत्तरभाग की राजधानी उज्जयिनी और दक्षिण भाग की राजधानी महिष्मती (मान्धाता)। चेदि आधुनिक बुंदेलखंड है इसकी राजधानी शक्तिमती थी।

बड़े एवं शक्तिशाली जनपदों को **महाजनपद** कहा जाता था। इनके अधीनस्थ कुछ छोटे जनपद होते थे।

आज के मध्यप्रदेश के क्षेत्र में अवंति एवं चेदि जनपद थे। उस समय के चार शक्तिशाली महाजनपदों में से एक जनपद 'अवंति' मध्यप्रदेश में था यहां का राजा चण्ड प्रद्योत था। उसकी बेटी वासवदत्ता थी जिसका विवाह काशी के राजा उदयन से हुआ था। आज भी ''उदयन-वासवदत्ता'' की कहानियां प्रचलित हैं।

इसी काल में बहुत से ऐसे राज्य थे जहाँ वंशगत राजा नहीं थे। इन राज्यों को **गणसंघ** कहा जाता था। गणसंघों में जनपदों व महाजनपदों की तरह राजा या सम्राट का पद वंशानुगत नहीं होता था। यहाँ राज्य के राजा को जनता चुनती थी जैसे कि आज हम अपनी सरकार चुनते हैं। इन गणसंघों में कुछ थे- मिथिला के वज्जि, कपिलवस्तु के शाक्य और पावा के मल्ल।

- **जनपदों के नामकरण उनके संस्थापक जन या कुल के नाम पर किये गये थे।**
- **अधिकांश महाजनपद विन्ध्य के उत्तर में थे और पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त से बिहार तक फैले हुए थे।**
- **जनपदों एवं महाजनपदों में राजा का पद वंशानुगत होता था, जबकि गणसंघों में राजा को जनता चुनती थी।**

मानचित्र को ध्यान से देखें और प्राप्त जानकारी से दी गई तालिका को पूरा करें।

क्र.	महाजनपद का नाम
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	
9.	
10.	
11.	
12.	
13.	
14.	
15.	
16.	

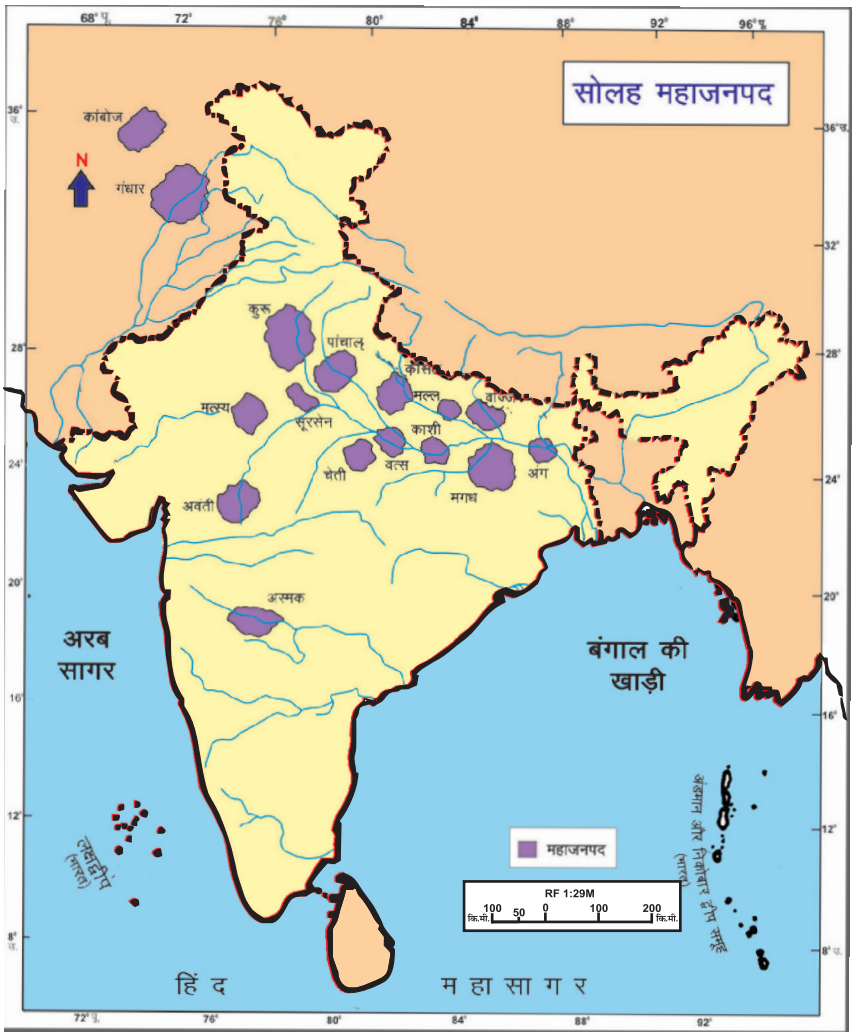

विभिन्न जनपदों, महाजनपदों तथा गणसंघों के लोगों के बीच वैवाहिक संबंध थे। वैवाहिक संबंधों के बाद भी इन जनपदों, महाजनपदों व गणसंघों के बीच साम्राज्य विस्तार को लेकर युद्ध होते रहते थे। धीरे-धीरे सोलह महाजनपदों में से चार शक्तिशाली महाजनपद बने। ये थे- अवन्ति, मगध, कौशल तथा वत्स। अपनी शक्ति बढ़ाने और सीमाओं का विस्तार करने के लिये मगध सदैव युद्धरत रहा। परिणाम स्वरूप वह सभी जनपदों तथा महाजनपदों में सर्वशक्तिमान बन गया।

मगध साम्राज्य की स्थापना एवं विस्तार (लगभग 544 ई.पू. से 430 ई.पू. तक)

सोलह जनपदों में मगध जनपद सबसे शक्तिशाली था। मगध को एक बड़े साम्राज्य के रूप में विकसित करने का पहला चरण हर्यंकवंश के राजा बिंबिसार के नेतृत्व में पूरा हुआ। उसने अंग को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया।